**लघुउत्तरीय प्रश्न ( ६० शब्दों में उत्तर दें )**

1. रूसी क्राँति के किन्हीं दो कारणों का वर्णन करें?
2. रूसीकरण की नीति क्राँति हेतु कहाँ तक उत्तरदायी थी?
3. साम्यवाद एक नई आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था थी कैसे ?
4. नई आर्थिक नीति मार्क्सवादी सिद्धांतो के साथ समझौता था कैसे ?
5. प्रथम विश्व युद्ध में रूस की पराजय क्राँति हेतु मार्ग प्रशस्त किया कैसे ?

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ( १५० शब्दों में उत्तर दें )**

1. रूसी क्राँति के कारणों की विवेचना करें।
2. नई आर्थिक नीति क्या है ?
3. रूसी क्राँति के प्रभाव की विवेचना करें।
4. कार्ल मार्क्स की जीवनी एवं सिद्धांतों का वर्णन करें।
5. यूटोपियन समाजवादियों के विचारों का वर्णन करें ?

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

**सुमेलित करें**

| | |
|---|---|
| (i) दास कैपिटल | (क) 1953 |
| (ii) चेका | (ख) कार्ल मार्क्स |
| (iii) नई आर्थिक नीति | (ग) 1883 |
| (iv) कार्ल मार्क्स की मृत्यु | (घ) गुप्त पुलिस संगठन |
| (v) स्टालिन की मृत्यु | (ङ) लेनिन |

**वर्ग परिचर्चा :**

1. आज के संदर्भ में समाजवाद एवं साम्यवाद की आवश्यकता पर वर्ग में चर्चा शिक्षक की उपस्थिति में करें।
2. भारतीय शासन प्रणाली में समाजवाद का प्रभाव पर परिचर्चा आयोजित करें।

# अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :**

1. रूस में कृषक दास प्रथा का अंत कब हुआ ?

   (क) 1861 (ख) 1862

   (ग) 1863 (घ) 1864

2. रूस में जार का अर्थ क्या होता था ?

   (क) पीने का बर्तन (ख) पानी रखने का मिट्टी का पात्र

   (ग) रूस का सामन्त (घ) रूस का सम्राट

3. कार्ल मार्क्स का जन्म कहाँ हुआ था ?

   (क) इंग्लैण्ड (ख) जर्मनी

   (ग) इटली (घ) रूस

4. साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग कहाँ हुआ ?

   (क) रूस (ख) जापान

   (ग) चीन (घ) क्यूबा

5. यूटोपियन समाजवादी कौन नहीं था।

   (क) लुई ब्लां (ख) सेंट साइमन

   (ग) कार्ल मार्क्स (घ) रॉबर्ट ओवन

6. 'वार एंड पीस' किसकी रचना है ?

   (क) कार्ल मार्क्स (ख) टॉलस्टाय

   (ग) दोस्तोवस्की (घ) एंजल्स

7. बोल्शेविक क्राँति कब हुई ?

   (क) फरवरी 1917 (ख) नवंबर 1917

   (ग) अप्रैल 1917 (घ) 1905

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

इस नई आर्थिक नीति के द्वारा लेनिन ने उत्पादन की कमी को नियंत्रित किया। इसके परिणामस्वरूप कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई। हालांकि लेनिन की इस नीति की आलोचना की जाती है लेकिन लेनिन ने इसका जवाब देते हुए कहा कि तीन कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटना–फिर भी दो कदम आगे रहने के समान है।

स्टालिन

1924 ई० में जब लेनिन की मृत्यु हुई तो उत्तराधिकार की समस्या आ खड़ी हुई। विभिन्न समूहों और अलग–अलग नेताओं के बीच सत्ता के लिए गंभीर संघर्ष चल रहे थे। इस संघर्ष में स्टालिन की विजय हुई। 1929 ई० में ट्राटस्की को निर्वासित कर दिया गया। 1930 के दशक में लगभग वे सभी नेता खत्म कर दिए गए जिन्होंने क्रांति में और उसके बाद के वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राजनीतिक लोकतंत्र तथा भाषण और प्रेस की स्वतंत्रता नष्ट हो गयी। पार्टी के अन्दर भी मतभेदों को बर्दाश्त नहीं किया जाता था। स्टालिन कम्युनिष्ट पार्टी का महासचिव था और 1953 ई० में अपनी मृत्यु तक तानाशाही व्यवहार करता रहा। इन घटनाओं का सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और इसमें ऐसी विशेषताएँ उभरी जो मार्क्सवाद और क्रांँति के मानवतावादी आदर्शों के विपरीत थी। स्वतंत्रता के सीमित हो जाने के कारण कला और साहित्य के विकास पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा।

परन्तु दूसरी ओर स्टालिन के अथक प्रयास से रूस विश्व के मानचित्र पर एक शक्तिशाली देश के रूप में सामने आया। तीन पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप रूस की औद्योगिक उन्नति शिखर पर पहुँच गई। कृषि का आधुनिकीकरण हुआ तथा विज्ञान की उन्नति हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त होने से पहले ही रूस को एक महान शक्ति माना जाने लगा था। युद्धकाल के सम्मेलनों में रूजवेल्ट और चर्चिल के साथ स्टालिन भी भाग लेता था, इस प्रकार तीन दशकों में ही तिरस्कृत, आक्रांत और कमजोर रूस विश्व की महान् शक्ति बन गया और वहाँ की मेहनतकश जनता में क्रांँति ने स्थायी रूप से अपनी जड़े जमा ली।

के अधिकार को संवैधानिक अधिकार बनाया गया। उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया और उद्योगों पर मजदूरों का नियंत्रण स्थापित किया गया। बैंकों, बड़े-बड़े उद्योगों, जल, परिवहन एवं रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया। शिक्षा पर से चर्च का अधिकार समाप्त कर उसका भी राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

इसी तरह लेनीन ने शासन के नियमों में परिवर्त्तन करते के साथ ही वोल्शेविक दल का नाम बदलकर साम्यवादी दल कर दिया और लाल रंग के झंडे पर हँसुए और हथौड़े को सुशोभित कर देश का राष्ट्रीय झंडा तैयार किया गया। उसके बाद से यह झंडा साम्यवाद का प्रतीक बन गया।

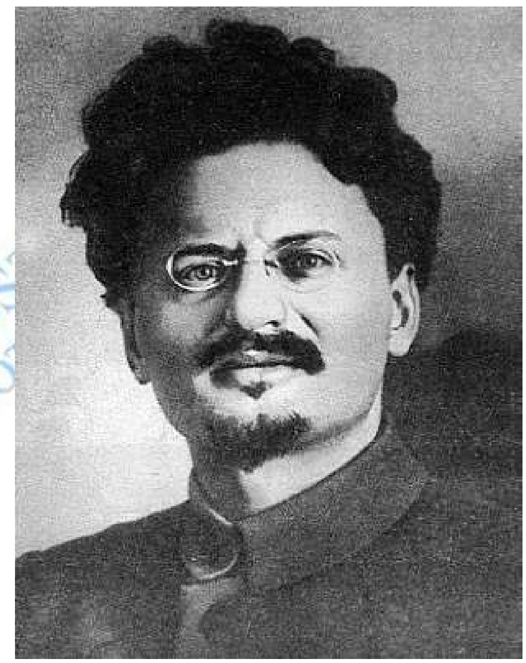

ट्रॉटस्की

अब लेनिन के समक्ष एक अन्य समस्या भूमि के पुनर्वितरण की थी। उसने एक आदेश जारी किया जिसके तहत बड़े भूस्वामियों की भूमि किसानों के बीच पुनर्वितरित किया गया। हालांकि किसानों ने भूमि पर पहले से ही कब्जा जमा रखा था। इस आदेश द्वारा लेनिन ने उसे सिर्फ वैधता प्रदान की। लेनिन के इस कदम की आलोचना हुई क्योंकि समाजवादी अर्थव्यवस्था में भूमि पर राज्य का नियंत्रण होता है। लेकिन लेनिन ने यह जवाब दिया कि किसान बहुमत में थे जबकि बोल्शेविक दल अल्पमत में था।

उत्पादन की समस्या के निपटारे के लिए लेनिन ने युद्धरत साम्यवाद को लागू किया। लेनिन ने इसके तहत फैक्ट्री के तकनीकविदों पर नियंत्रण स्थापित किया एवं मजदूरों की सहायता से फैक्ट्री के उत्पादन पर भी नियंत्रण स्थापित किया। इसी तरह किसानों पर भी नियंत्रण लगाया गया एवं किसानों से बलपूर्वक अनाजों की वसूली की जाने लगी । फैक्ट्री में श्रमिक हड़ताल पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाया गया। परन्तु युद्धरत साम्यवाद के विरूद्ध रूस में भयंकर प्रतिक्रिया हुई। जर्बदस्ती वसूली के भय से किसानों ने अपना अनाज जलाना शुरू किया। परिणामतः 1920-21 में उत्पादन का स्तर काफी गिर गया। करोड़ों लोगों के सामने

**बोल्शेविक क्राँति ( नवंम्बर १९१७ )**

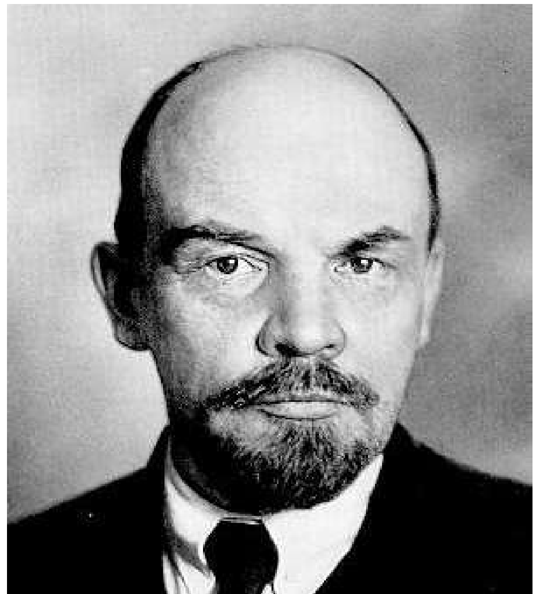

लेनिन

इसी समय रूस के राजनीतिक मंच पर लेनिन का प्रादूर्भाव हुआ । जार की सरकार ने उसे निर्वासित कर दिया था अत: वह स्वीटजरलैंड में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहा था। जब मार्च 1917 ई० में क्राँति हुई, वह जर्मनी की सहायता से रूस पहुँचा। अप्रैल 1917 में जब वह पेट्रोग्राद पहुँचा तब रूस की जनता का उत्साह बढ़ गया । लेनिन ने घोषित किया कि रूसी क्राँति पूरी नहीं हुई है अत: एक दूसरी क्राँति अनिवार्य है। उसने बोल्शेविक दल का कार्यक्रम स्पष्ट किया जो,'अप्रैल थीसिस' के नाम से प्रसिद्ध है। लेनिन ने तीन नारे दिए-भूमि, शांति और रोटी। लेनिन ने बल प्रयोग द्वारा केरेन्सकी सरकार को उलट देने का निश्चय किया। सेना और जनता दोनों ने उसका साथ दिया। 7 नवंम्बर 1917 ई० को बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राद के रेलवे स्टेशन, बैंक, डाकघर, टेलीफोन-केंन्द्र, कचहरी तथा अन्य सरकारी भवनों पर अधिकार कर लिया। केरेन्सकी रूस छोड़कर भाग गया। इस प्रकार रूस की महान नवंम्बर क्रांति (इसे अक्टूबर क्रांति भी कहते हैं) सम्पन्न हुई। अब शासन की बागडोर बोल्शेविकों को हाथ में आ गई जिसका अध्यक्ष लेनिन को बनाया गया तथा ट्राटस्की इस सरकार का विदेश मंत्री बना। विश्व में पहलीबार शासन सत्ता सर्वहारा वर्ग के हाथों में आ गई।

सता पर कब्जा करने के पश्चात् लेनिन और बोल्शेविक दल का उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया। सता में आने के बाद लेनिन के समक्ष कई जटिल समस्याएँ थी। परन्तु उसने बहुत हद तक इन समस्याओं का निराकरण करने की कोशिश की। सर्वप्रथम उसने जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि की। इस संधि में सोवियत रूस को लगभग एक चौथाई भूभाग गवाँना पड़ा। परंतु लेनिन प्रथम विश्व युद्ध से बाहर हो गया तथा उसने अब आंतरिक समस्याओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया। इसी समय रूस में गृहयुद्ध की समस्या भी उत्पन्न हुई। जिसमें अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और फ्रांस ने हस्तक्षेप करते हुए सोवियत रूस पर आक्रमण कर दिया परन्तु लेनिन ने साहसपूर्वक इन विरोधियों का

ई० में एक प्रतिनिध्यात्मक संस्था ड्यूमा का गठन हुआ। परन्तु 1906 ई० तक जैसे ही क्राँति की शक्ति कमजोर हुई, रूसी राजतंत्र ने ड्यूमा के कुछ अधिकार छिन लिए। यद्यपि 1905 की क्राँति विफल रही, परन्तु भीतर ही भीतर आग सुलगती रही जो 1917 ई० में एक महान क्राँति के रूप में प्रकट हुई।

**७. रूस में मार्क्सवाद का प्रभाव तथा बुद्धिजीवियों का योगदान :**

रूस की क्राँति से पूर्व एक वैचारिक क्राँति भी देखी जा सकती थी। लियो टॉलस्टाय (रचना-वारएंड पीस) दोस्तोवस्की, तुर्गनेव जैसे चिंतक इस नए विचार को प्रोत्साहन दे रहे थे। रूस के औद्योगिक मजदूरों पर कार्ल मार्क्स के समाजवादी विचारों का पूर्ण प्रभाव था। मार्क्सवादियों था ने मजदूरों के बीच काम करना शुरू कर दिया तथा उनका संगठन भी बढ़ रहा था। रूस का पहला साम्यवादी प्लेखानोव था जो रूस में जारशाही की निरंकुशता समाप्त करके साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना चाहता था। उसने 1898 ई० में रशियन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। यह साम्यवादी दल का पूर्ववर्ती था। शीघ्र ही 1903 ई० में साधन एवं अनुशासन के मुद्दे पर पार्टी में फूट पड़ गई। इसके परिणामस्वरूप बहुमतवाला दल 'बोल्शेविक' कहलाया और अल्पमतवाला दल 'मेनशेविक'। मेनशेविक मध्यवर्गीय क्राँति के पक्षघर थे पर, बोल्शेविक सर्वहारा क्राँति के पक्षघर थे। इसके अतिरिक्त 1901 ई० में 'सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी' का गठन हुआ जो किसानों की माँगों को उठाती थी। इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित मजदूर एवं किसानो के संगठन रूस की क्राँति का एक महान कारण साबित हुए।

> **सर्वहारा वर्ग**
> **समाज का वैसा वर्ग जिसमें किसान, मजदूर एवं आम गरीब लोग शामिल हैं।**

**८. तात्कालिक कारण-प्रथम विश्व युद्ध में रूस की पराजय :**

प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 ई० तक चला। इस युद्ध में रूस भी मित्र राष्ट्रों की ओर से शामिल हुआ था। इस युद्ध में सम्मिलित होने का एकमात्र उद्देश्य था कि रूसी जनता आंतरिक असंतोष भूलकर बाहरी मामलों में उलझ जाए। परन्तु इस युद्ध में चारों तरफ रूसी सेनाओं की हार हो रही थी, न उनके पास अच्छे हथियार थे एवं न ही पर्याप्त भोजन की सुविधा थी। युद्ध के मध्य जार ने सेना का कमान अपने हाथों में ले लिया परिणामस्वरूप दरबार खाली हो गया तथा उसकी अनुपस्थिति में जरीना और उसके तथाकथित गुरू रासपुटिन (पादरी ) को षड्यंत्र करने का मौका मिल गया। जिसके कारण राजतंत्र की प्रतिष्ठा और भी गिर गई।

**३. मजदूरों की दयनीय स्थिति :**

रूस में मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उन्हें अधिक काम करना पड़ता था परन्तु उनकी मजदूरी काफी कम थी। उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। अत: वे अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं थे। मजदूरों को कोई राजनैतिक अधिकार नहीं थे। अपनी मांगों के समर्थन में वे हड़ताल भी नहीं कर सकते थे। मार्क्स के ये शब्द कि 'मजदूरों के पास सिवाय अपनी बेड़ियों के खोने के लिए कुछ भी नहीं है; उनकी दशा का सही चित्रण करता है।

**४. औद्योगीकरण की समस्या :**

रूसी औद्योगीकरण पश्चिमी पूँजीवादी औद्योगीकरण से भिन्न था। यहाँ कुछ ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उद्योगों का संकेद्रण था। यहाँ राष्ट्रीय पूँजी का अभाव था। अत: उद्योगों के विकास के लिए विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ गई थी। विदेशी पूँजीपति आर्थिक शोषण को बढ़ावा दे रहे थे। अत: चारो ओर असंतोष व्याप्त था।

**५. रूसीकरण की नीति :**

सोवियत रूस विभिन्न राष्ट्रीयताओं का देश था। यहाँ मुख्यत: स्लाव जाति के लोग रहते थे। इनके अतिरिक्त फिन, पोल, जर्मन, यहूदी आदि अन्य जातियों के लोग भी थे। ये भिन्न-भिन्न भाषा बोलते थे तथा इनका रस्म-रिवाज भी भिन्न-भिन्न था। परन्तु रूस के अल्पसंख्यक समूह जार-निकोलस द्वितीय द्वारा जारी की गई रूसीकरण की नीति से परेशान था। इसके अनुसार जार ने देश के सभी लोगों पर रूसी भाषा, शिक्षा और संस्कृति लादने का प्रयास किया। इससे अल्पसंख्यकों में हलचल मच गई। 1863ई० में इस नीति के विरूद्ध पोलों ने विद्रोह किया तो उनका निर्दयतापूर्वक दमन किया गया। इस प्रकार रूसी राजतंत्र के प्रति उनका आक्रोश बढ़ता जा रहा था।

**६. विदेशी घटनाओं का प्रभाव :**

(i) **क्रीमिया का युद्ध :** रूस की क्रांति में विदेशी घटनाओं की भूमिका भी अत्यधि क महत्वपूर्ण थी। सर्वप्रथम क्रीमिया के युद्ध में रूस की पराजय ने उस देश में सुधारों का युग आरम्भ किया। तत्पश्चात 1904-05 के रूस-जापान युद्ध ने रूस में पहली क्रांति को जन्म दिया और अंतत: प्रथम विश्व युद्ध में बॉल्शेविक क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

के लिए आठ घंटे के कार्य-दिवस की माँग किया जाना भी तय किया गया। इसका अंतरराष्ट्रीय सचिवालय ब्रूसेल्स में स्थापित किया गया। 1 मई 1890 को सारे यूरोप और अमेरिका में लाखों मजदूरों ने हड़ताल और प्रदर्शन किया, तब से 1 मई, अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप मे सारे संसार में मनाया जाता है। द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ की सबसे बड़ी उपलब्धि थी- सैन्यवाद एवं युद्ध के विरूद्ध आंदोलन तथा सभी राष्ट्रों की बुनियादी समानता तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उनके अधिकार पर जोर।

इस प्रकार समाजवादी आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत आधार मिलने पर श्रमिकों में विश्वास एवं इस आशा का संचार हुआ कि इतिहास उनकी तरफ है तथा भविष्य में एक ऐसे संसार का निर्माण होना है, जो शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त होगा।

**१९१७ की बाँल्शेविक क्राँति :**

बीसवीं शताब्दी के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना रूस की क्राँति थी। इस क्राँति ने रूस के सम्राट अथवा जार के एकतंत्रीय निरंकुश शासन का अंत कर मात्र लोकतंत्र की स्थापना का ही प्रयत्न नहीं किया, अपितु सामाजिक, आर्थिक और व्यवसायिक क्षेत्रों में कुलीनों, पूँजीपतियों और जमींदारों की शक्ति का अंत किया तथा मजदूरों और किसानों की सत्ता को स्थापित किया।

जार निकोलस II

रूस की बॉल्शेविक क्राँति सही मायने में नवंबर 1917 ई० में सम्पन्न हुई। इस क्राँति ने एक नई राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था-साम्यवाद-का आदर्श उपस्थित करने के साथ-साथ विश्व में सर्वप्रथम सर्वहारा वर्ग की सत्ता की स्वीकृति का भी प्रयास किया।

## इस क्राँति के निम्नलिखित कारण थे:-

**१. जार की निंरकुशता एवं अयोग्य शासन :**

मोड़ मिला । मार्क्स हीगल के विचारों से प्रभावित था । 1843 में उसने बचपन की मित्र जेनी से विवाह किया। उसने राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास पर मांण्टेस्कयू तथा रूसो के विचारों का गहन अध्ययन किया। कार्ल मार्म्स की मुलाकात पेरिस में 1844 ई० में फ्रेडरिक एंगेल्स से हुई जिनसे जीवन भर उनकी गहरी मित्रता बनी रही। एंगेल्स के विचारों एवं रचनाओं से प्रभावित होकर मार्क्स ने भी श्रमिक वर्ग के कष्टों एवं उनकी कार्य की दशाओं पर गहन विचार करना आरंभ कर दिया। मार्क्स ने एंगेल्स के साथ मिलकर 1848 ई० में एक साम्यवादी घोषणा पत्र प्रकाशित किया जिसे आधुनिक समाजवाद का जनक कहा जाता है। उपर्युक्त घोषणा पत्र में मार्क्स ने अपने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। मार्क्स विश्व के उन गिने-चुने चिंतकों में एक है, जिसने इतिहास की धारा को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। मार्क्स ने 1867 ई० में 'दास-कैपिटल' नामक पुस्तक की रचना की जिसे ''समाजवादियों की बाइबिल'' कहा जाता है।

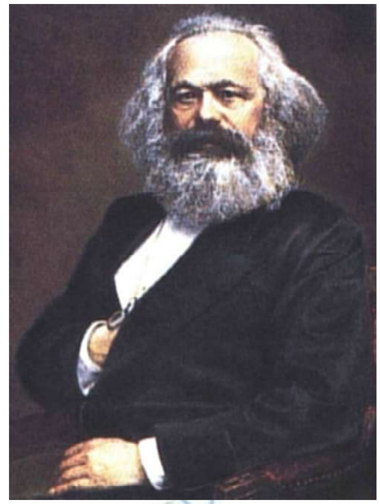

कार्ल मार्क्स

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

## मार्क्स के सिद्धांत :

1. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत
2. वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत
3. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
4. मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
5. राज्यहीन व वर्गहीन समाज की स्थापना

## ऐतिहासिक भौतिकवाद :

कार्ल मार्क्स के द्वारा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या प्रस्तुत की गई। उसने कहा कि इतिहास उत्पादन के साधन पर नियंत्रण के लिए दो वर्गों के बीच चल रहे निरंतर संघर्ष की कहानी

की दया पर जीवित था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्थिक दृष्टि से समाज का विभाजन दो वर्गों में हो गया था–

(1) पूँजीपति वर्ग (2) श्रमिक वर्ग

जिस समय श्रमिक जगत आर्थिक दुर्दशा और सामाजिक पतन की स्थिति से गुजर रहा था, उसी समय श्रमिकों को कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्र–भक्तों, विचारकों और लेखकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इन व्यक्तियों ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा का प्रतिपादन किया जिसे 'समाजवाद' के नाम से जाना जाता है। इन विचारकों में सेन्ट साइमन, फौरियर, लुई ब्लां, राबर्ट ओवन, कार्ल मार्क्स एवं एंगेल्स का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन महान विचारकों ने यूरोपीय देशों में प्रचलित आर्थिक व्यवस्था की कड़ी आलोचना की तथा औद्योगिक संगठन और पूँजीपतियों एवं श्रमिकों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में नवीन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक समाजवाद का विभाजन दो चरणों में किया जाता है– मार्क्स से पूर्व का समाजवाद एवं मार्क्स के पश्चात् का समाजवाद। मार्क्सवादी विचारकों ने इन्हें क्रमशः यूटोपियन एवं वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया। यूटोपियन समाजवादियों की दृष्टि आदर्शवादी थी तथा उनके कार्यक्रम की प्रकृति अव्यवहारिक थी। अधिकतर यूटोपियन विचारक फ्रांसीसी थे जो क्राँति के बदले शांतिपूर्ण परिवर्तन में विश्वास रखते थे अर्थात वे वर्ग संघर्ष के बदले वर्ग समन्वय के हिमायती थे।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

## यूटोपियन समाजवादी :

प्रथम यूटोपियन (स्वप्नदर्शी) समाजवादी, जिसने समाजवादी विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक फ्रांसीसी विचारक सेंट साइमन था। उसका मानना था राज्य एवं समाज को इस ढ़ंग से संगठित करना चाहिए कि लोग एक दूसरे का शोषण करने के बदले मिलजुल कर प्रकृति का दोहन करें, समाज को निर्धन वर्ग के भौतिक एवं नैतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उसने घोषित किया 'प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार'। आगे यही समाजवाद का मूलभूत नारा बन गया।